RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Vol.: 1, Issue: 2, July-December 2023, pp.20-24

महाकवि राजशेखर कृत बालरामायण में रसतत्त्व

डॉ सत्य प्रकाश श्रीवास्तव[1] एवं जनेश्वर सिंह[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर एवं [2]शोध छात्र
सी.एम.पी.डिग्री कॉलेज, इलाहबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज ,उत्तर प्रदेश
ई-मेल : janeshwar14696@gmail.com

सारांश

आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रस के स्वरूप का वर्णन किया है आचार्य भरतमुनि के पश्चात् सभी नाट्य कवियों एवं आचार्यों ने रस को स्वीकार कर अपने ग्रन्थों की रचना की और ग्रन्थ में रस के स्वरूप का अधिकाधिक वर्णन किया है। भास कालिदास भवभूति मुरारि नाट्य कवियों के पश्चात् महाकवि राजशेखर ने भी अपनी नाट्यकृति बालरामायण में रस वर्णन के विषय में पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा का निर्वहन किया। महाकवि राजशेखर का बालरामायण सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है इसमे 10 अङ्क जिसमें सीता विवाह से राम राज्याभिषेक तक का वर्णन है। कुछ आचार्यों ने इसे महानाटक भी स्वीकार किया। इस महानाटक बालरामायण के रचना के पश्चात् समकालीन आचार्य शङ्कर वर्मा ने राजशेखर को वाल्मीकि व भवभूति का अवतार कहा। महाकवि राजशेखर ने बालरामायण में रस के माध्यम से श्रोताओ या सहृदयी को रसतत्त्व का आनन्द प्राप्त कराते है। प्रस्तुत लेख में महाकवि राजशेखर कृत बालरामायण में रस तत्व के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी है।

मुख्य शब्दः रसतत्व, महाकवि राजशेखर, बालरामायण, काव्यमीमांसा

प्रस्तावना

स्वादुपाकेऽप्यनास्वाद्यं भोज्यं निर्लवणं यथा ।
तथैव नीरसं काव्यं स्यान्नो रसिकतुष्टये ‖ रस प्रदीप पृष्ठ-17

नीरस काव्य उसी भांति रसिकों के लिए तुष्टिप्रद नहीं होता जैसे सुस्वादुपाक भी नमक से रहित भोजन इसलिए रीति गुण तथा अलंकार आदि सभी साधन रस के अनुचर बताए गए।

रस के विषय में आचार्य भरतमुनि ने कहा है-

विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रस निष्पत्तिः

अर्थात्- काव्य में प्रयुक्त अथवा नाट्य काव्य में अभिनय के द्वारा प्रदर्शित विभाव अनुभाव तथा

व्यभिचारी भावों के द्वारा श्रोताओं अथवा दर्शकों के ह्रदय में परिवर्तन रति आदि स्थायी भाव आस्वाद्य होता है तो वही रस कहलाता है।

वस्तु, नेता एवं रस तीनों ही रुपक के भेदक तत्त्व है। यद्यपि रुपक में इनका स्थान समान है तथापि रूपक का प्राणतत्त्व होने के कारण वस्तु एवं नेता की अपेक्षा रस का अधिक महत्त्व है। वस्तुत: रसोद्रेक करना ही नाट्य का लक्ष्य है। आचार्य भरतमुनि से लेकर पश्चाद्वर्ती प्राय: सभी आचार्यों ने रस के महत्त्व को स्वीकार किया ।

भरतमुनि के अनुसार- न हि रसादृते कश्चित् अर्थ प्रवर्तते ।

आचार्य क्षेमेन्द्र-- रससिद्धि की स्थिरता को ही काव्य का प्राणतत्त्व बताते है ।

आचार्य आनन्दवर्धन-- रस को हि काव्य में सर्वाधिक प्रामुख्य प्रदान करते है।

मुख्या व्यापारविषयाः सुकवीनां रसादय: ।

तेषां निबन्धने भाव्य: तै सदैवा प्रमादिभिः ।।

मीमांसा नीरसस्तु प्रबन्धो यः सोऽपशब्दो महान् कवेः ।

स तेनाकविरेव स्यादन्येनास्मृत लक्षणः ।।

राजशेखर ने भी काव्यमीमांसा में रस को काव्य की आत्मा कहा है। अतः स्पष्ट है कि रस का स्थान रुपक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

बालरामायण में रसतत्त्व

नाट्य काव्य परम्परा में आचार्य भरतमुनि द्वारा रचित ग्रन्थ नाट्यशास्त्र 36 अध्याय का बृहत्तम ग्रन्थ है। भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में नाट्य काव्य का महत्व बताते हुए कहा है कि विश्व का कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग और कर्म नहीं है जो नाट्य काव्य में समाहित न हो।

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला

नासौ योगो न तत्कर्मनाट्येस्मिन यन्न दृश्यते।। (नाट्यशास्त्र १/ ११६)

इस महानाटक बालरामायण के रचना के पश्चात् समकालीन आचार्य शङ्कर वर्मा ने राजशेखर को वाल्मीकि व भवभूति का अवतार कहा-

बभूव वल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम् ।

स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया स वर्त्तते संप्रति राजशेखरः ।। १६ ।।

बालरामायण में वीर रस को प्रधान रस के रूप में उल्लेख किया गया है वीर रस दर्शकों एव श्रोताओं को रसानन्द के रूप में प्राप्त होता है।

आस्कन्धावधि कण्ठकाण्डविपिने द्राक्चन्द्रहासासिना

छेत्तुं प्रक्रमिते मयैव टसितित्रुट्यच्छिरासंततौ

प्रस्मेरं गलिताश्रु गद्गदपदं भुग्न भ्रुवा यद्यभू

द्वतेष्वेकमपि स्वयं स भगवांस्तन्मे प्रमाण शिवः ।।३१।।

लङ्काधिपति रावण अपने चन्द्रहास तलवार की शौर्यता को प्रकट करता है और बताया है कि मेरी

चन्द्रहास के सामने भू भुवः स्वः तीनों लोक मेरे सामने नतमस्तक हुए हैं इसके साक्षी भगवान शिव हैं क्योंकि परोक्ष की वस्तु में वर्तमान प्रत्यय से ही कार्य होते हैं।

बालरामायण के चतुर्थ अड्क में भार्गव परशुराम के श्रेष्ठ पराक्रम का परम उत्कर्ष दिखाया गया है भगवान जामदग्न्य के सामने सभी राजाओं की दशा वर्णन प्राप्त होता है।

याचन्ते गृहिणीमुखेन पतयः स्वप्राणभिक्षामिमे
बन्धन्तश्चरणा ग्रयोर्निपतिताः कण्ठे कुठारान् परे ।
लीलादर्पणपाणयो विरचितस्त्रीवेशमेते नताः
किञ्चान्ये विगलन्ति चीवरभृतो द्वार्वेदिकाशायिनः ।। ४०

इस श्लोक में भगवान परशुराम की श्रेष्ठ वीरता पराक्रम का ज्ञान प्राप्त होता है सहृदयी इस पराक्रम की रसानन्दानुभूति करते है

बालरामायण में अद्भुत रस का भी वर्णन प्राप्त होता है अलौकिक पदार्थों के देखने सुनने तथा ईप्सित वस्तु के सहसा मिल जाने से अद्भुत रस उत्पन्न होता है-

यावद्वरं न वृणुते किल जामदग्न्य स्तुष्टात् पितुः स्वजननीप्रतिजीविताय ।
तावच्छिर पृथगपि स्थितमस्य मातु र्वेगादुपेत्य विदधात्यकबन्धभावम् ।। ३२ ।।

इस श्लोक में अद्भुत आनन्दरस की प्राप्ति होती है मातलि कहता है आश्चर्य है, आश्चर्य है, आश्चर्य है जैसे ही भगवान परशुराम वर माँगते है वैसे ही उनकी माता का सिर पुनः धड (शरीर) से शीघ्र जुड जाता है।

लक्ष्मणः- (आश्चर्य) आर्य !

क्षिप्तो गिरि कच्छपपृष्ठपीठात् संघट्टवेगोच्छलितोऽनुपाती
ग्रासीकृतोऽयं तिमिना किमन्यत् स चापि लोलेन तिमिङ्गिलेन ॥ ५२ ॥
राम- वत्स लक्ष्मण !

क्षिप्तो गिरिर्जलधिबन्धविधौ नलेन यात्येकतः शकुलशाव विवर्तनाभिः
अप्यन्यतः कमठडिम्भनिशुम्भनेन सेतुः कथञ्चिदिति सर्पति मध्यमब्धेः ।।५४।।

लक्ष्मण (आश्चर्य) से कहते हैं आर्य (राम) जलचर पत्थर प्रत्यक्ष हो रहे हैं । उत्तर में भगवान रामचंद्र कह रहे हैं कि वत्स लक्ष्मण यह तो अत्यन्त कम हैं । यहाँ भी अद्भुत रस के रूप में आनन्दरस की प्राप्ति हो रही है।

बालरामायण महानाटक में श्रृङ्गार रस का भी वर्णन हुआ है। अतः सहृदयी को श्रृङ्गार रस के रूप में रसानन्दानुभूति होती है। बालरामायण के प्रथम अड़क में रावण ने माता जानकी की सुन्दरता तीन लोक से न्यारी तथा काम की सञ्जीवनी के रूप में बताया है। अत यहाँ पर माता सीता की सुन्दरता का मार्मिक वर्णन मिलता है ।

इन्दुर्लिप्त इवाञ्जनेन जडितादृष्टिर्मृगीणामिव
प्रम्लानारुणिमेव विद्रुमलता श्यामेवहेमद्युतिः ।

पारुष्यं कलया चकोकिलवधूकण्ठेष्विव प्रस्तुतं

सीतायाः पुरतश्च हन्त शिखिनां बर्हाः सगर्हा इव ॥ ४२ ॥

इस श्लोक में दशानन रावण के मन में आश्चर्य व आनन्द के भाव व्यक्त होते हैं। रावण कहता है कि "कामदेव का व्यापार एक ही प्रकार का नहीं हैं वह सीता की सुन्दरता का गुणगान करता है।

न्यञ्चत्कुञ्चित्तमुन्मुखं हसितवत्साकूतमाकेकरं

व्यावृत्त प्रसरत्प्रसादि मुकुलं सत्प्रेम कम्पं स्थिरम् ।

उदभ्रू भ्रान्तमपाङ्गवृत्तिविकचं मज्जत्तरङ्गाकुलं

चक्षुः साधु च वर्त्तते रसवशादेकेकमन्यक्रियम् ।।१६।।

बालरामायण नाटक में करुण रस का भी वर्णन मिलता है। आचार्य राजशेखर ने करुण रस के माध्यम से भी रसिकों को रसानन्द की प्राप्त कराते है । बालरामायण के षष्ठ अंक में राम का प्रवास सुनकर दशरथ आदि का दुःख करना भी करुण व्यञ्जक है|

दशरथ- हा हा धिक्कष्टम्

नरेन्द्रो वृद्धः स्त्रीवश इति मयि न्यस्तमयशो

निषण्णा दौरात्म्येष्विति मलिनिता केकयसुता ।

मतं तस्याप्यस्मिन्निति च भरते लक्ष्म लिखितं

वा कोऽस्मिन् रघुकुलकलङ्के कविरभूत् ।। १५ ।।

इस श्लोक में राजा दशरथ स्वयं कैकेयी और कुमार भरत के विषय में कलङ्क का वर्णन करते हैं मालूम नहीं होता है कि रघुकुल के इस कलङ्क का कर्ता कौन बना ?

बालरामायण में भयानक रस का भी उद्धरण मिलता है जिसमें श्रोतागण भयानक रस के रूप में रसानन्द का रसास्वादन करते हैं। बालरामायण के प्रथम अङ्क में रावण के मिथिला आने पर सीता के भयभीत होने का वर्णन दृष्टिगत है |

बालरामायण के तृतीय अङ्क के तीसरे श्लोक में आश्चर्य स्वरूप वाली राक्षसी ताड़का का वर्णन किया गया है-

रक्ताभ्यक्तोरुसृक्का गुरुकवलवलज्जाङ्गलव्यग्रतालु:

फेत्कारैः फुल्ल गल्लव्यतिकरगुरुभिः कम्पयन्ती जगन्ति ।

अन्योन्येनाग्रपाणिप्रणयि शवयुगं ताडका ताडयन्ती

सेयं द्राग्दृष्टदंष्ट्राकुरकषण रणत्कार भीमाऽभ्युपैति ॥ ३ ॥

सुवेगा बताती है कि यह दुष्टा ताडका भीषणो की भी भीषण है अत% कुशिकनन्दन की आज्ञा से राघव रामचन्द्र इसका संहार करो।

बालरामायण में हास्य रस का अधिकाधिक वर्णन मिलता है। राजशेखर ने हास्यरस के माध्यम से सुधीजनों को रसास्वादन प्राप्त कराते हैं। मिथिला पुरी में क्रोधित जनक को देखकर दशानन रावण हँसता है और परिहास कर दूसरे लोगों को भी हँसाता है -

हस्तालम्बितमक्ष सूत्रवलयंकर्णावतंसीकृत

त्रस्तं भ्रयुगमुच्चमय्य रचितं यज्ञोपवीतेन च ।
संनद्धा जघने च वल्कलपटी पाणिश्च धत्ते धनु -
दृष्टं भो जनकस्य योगिन इदं दान्तं विरक्तं मनः ॥ ५३ ॥

निष्कर्ष

महाकवि राजशेखर ने अपने नाट्य ग्रन्थ बालरामायण में रसो का बृहद् वर्णन किया है उन्होंने वीर रस को प्रधान रस के रूप में उल्लेख किया है साथसाथ श्रृङ्गार आदि अन्य रसो का भी सुन्दर - मार्मिक वर्णन किया है, जिससे दर्शकों एवं श्रोताओं का रसानन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार राजशेखर कृत बालरामायण में अनेक रूपों में रस तत्वो की अनुभूति होती है जिससे इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ की उपयोगिता सिद्ध होती है।

सन्दर्भ

द्विवेदी, पी. (1995). नाट्य शास्त्र 1/116 चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी प्रथम संस्करण
बालरामायण 1/16. चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी -डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 2/31 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011 -डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 4/40 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 4/32 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 7/52/54 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 1/42 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 2/19 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 6/15 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 03/03 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय
बालरामायण 01/53 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी संस्करण-2011-डा. गङ्गासागर राय